राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम- हिंदी
पाठ- 14: महादेवी वर्मा
कार्यपत्रक-14

1. महादेवी की कविता किन दो अर्थों को साथ-साथ लेकर चलती है? स्पष्ट कीजिए।

2 प्रकृति के सौंदर्य को देखकर अपने मन में उठनेवाली भावनाओं को संक्षेप में लिखिए।

3. 'परिचय इतना इतिहास यही उमड़ी कल थी मिट आज चली' इस पंक्ति का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

4 महादेवी की कविता में अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है। उदाहरण सहित प्रस्तुत कीजिए।

5. महादेवी की कविता "मैं नीर भरी दुःख की बदली' में क्या मूर्त की तुलना अमूर्त से की गई है? उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए।

6. महादेवी की विरह वेदना के स्वरूप को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

7. 'विस्तृत नभ का कोई कोना

मेरा न कभी अपना होना।'

इस पंक्ति से क्या संदेश मिलता है? विवेचन कीजिए।

8 मैं नीर भरी दुःख की बदली' कविता की प्रमुख शिल्पगत विशेषताएं प्रस्तुत कीजिए।

9 महादेवी की कविता का मूल संदेश क्या है? संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

10 महादेवी अपने जीवन की तुलना बदली से क्यों करती हैं? स्पष्ट कीजिए।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम- हिंदी
पाठ- 14: महादेवी वर्मा
कार्यपत्रक-14